ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय- हिन्दी

दिनांक—11/11/2020 माटी वाली

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

माटी वाली

__विद्यासागर नौटियाल

“इनके खरीदार कई बार हमारे घर के चक्कर काटकर लौट गए। पुरखा की गाड़ी कमाई से हासिल की गई चीजों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता। हमें क्या मालूम कैसी तंगी के दिनों में अपनी जीभ पर कोई स्वादिष्ट, चटपटी चीज़ रखने के बजाय मन मसोसकर दो-दो पैसे जमा करते रहने के बाद खरीदी होंगी उन्होंने ये तमाम चीजें, जिनकी हमारे लोगों की नजरों में अब कोई कीमत नहीं रह गई है। बाजार में जाकर पीतल का भाव पूछो जरा. दाम सुनकर दिमाग चकराने लगता है। और ये व्यापारी हमारे घरों से हराम के भाव इकट्ठा
~~~~~~~~~~

कर ले जाते हैं, तमाम बर्तन-भाँडे। काँसे के बरतन भी गायब हो गए हैं, सब घरों से।"

"इतनी लंबी बात नहीं सोचते बाकी लोग। अब जिस घर में जाओ वहाँ या तो स्टील के भाँडे दिखाई देते हैं या फिर काँच और चीनी मिट्टी के।

" अपनी चीज का मोह बहुत बुरा होता है। मैं तो सोचकर पागल हो जाती हूँ कि अब इस उमर में इस शहर को छोड़कर हम जाएँगे कहाँ!"

"ठकुराइन जी जो ज़मीन-जायदादों के मालिक हैं, वे तो कहीं न कहीं ठिकाने पर जाएँगे ही। पर मैं सोचती हूँ मेरा क्या होगा! मेरी तरफ़ देखने वाला तो कोई भी नहीं।"

चाय खत्म कर माटी वाली ने एक हाथ में अपना कपड़ा उठाया, दूसरे में खाली कटर और खोली से बाहर निकलकर सामने के घर में चली गई।

उस घर में भी 'कल हर हालत में मिट्टी ले आने' के आदेश के साथ उसे दो रोटियाँ मिल गईं। उन्हें भी उसने अपने कपड़े के एक दूसरे छोर में बाँध लिया। लोग जानें तो जानें कि वह ये रोटियाँ अपने बुड्ढे के लिए ले जा रही है। उसके घर पहुँचते ही अशक्त बुढ्ढा कातर नज़रों से उसकी और देखने लगता है। वह घर में रसोई बनते का इंतज़ार करने लगता है। आज वह घर पहुँचते ही तीन रोटियाँ अपने बड़े के हवाले कर देगी। रोटियों को देखते ही चेहरा खिल उठेगा बुड़े का। साथ में ऐसा भी बोल देगी, "साग तो कुछ है नहीं अभी।"

और तब उसे जवाब सुनाई देगा, "भूख मीठी कि भोजन मीठा?" उसका गाँव शहर के इतना पास भी नहीं है। कितना ही तेज़ चलो फिर भी घर पहुँचने में एक घंटा तो लग ही जाता है। रोज़ सुबह निकल जाती है वह अपने घर से। पूरा दिन

माटाखान में मिट्टी खोदने, फिर विभिन्न स्थानों में फैले घरों तक उसे ढोने में बीत जाता है।

क्रमशः

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”